शब्द शक्ति

डॉ0 अर्चना सिंह

शब्द एवं अर्थ में अविनाभाव सम्बन्ध है। शब्द के बिना अर्थ की कल्पना तक नहीं की जा सकती। सार्थक शब्दों से ही साहित्य की सृष्टि संभव है। शब्द अपने अर्थ को कैसे प्रकट करता है? वैयाकरणों का यह गहन चिन्तन का विषय रहा है।

संस्कृत काव्यशास्त्र अपेक्षाकृत अन्य शास्त्रों से अर्वाचीन है। प्रो0 राजेन्द्र मिश्र के अनुसार, काव्य से ही 'शास्त्र' पैदा होता है। यह ध्रुव सत्य है। काव्यशास्त्र से काव्य नियमित एवं निर्देशित अवश्य होता है, परन्तु पैदा नहीं होता है। चूँकि वेद काव्य हैं अथवा यह कहें कि वेद में काव्य भी है–अतः वेद एवं काव्यशास्त्र के अन्तस्सम्बन्ध को नकारा नहीं जा सकता है।